"नगरीय महिला सशक्तिकरण में सूचना एवं संचार तकनीकी की भूमिका" (उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ नगर के विशेष सन्दर्भ में)

शोध छात्रा– अभिलाशा गुप्ता
abhi.nami05@gmail.com

शोध सार–

सूचना एंव ज्ञान के इस युग में महिलाएँ माध्यमों की अहम् भूमिका को आज सम्पूर्ण वि"व में एक परिवर्तनकारी कारक के रूप में देखा जा रहा है। वर्तमान युग को सूचना युग एवं समाज को सूचना समाज के नाम से जाना जाता है। ऐसे में तकनिक जो सूचना को संचरित करती है उसका बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। मार्क्स के अनुसार तकनीक ही समाज में परिवर्तन लाता है। तकनीकी के विकास के साथ समाज के प्रकार में भी परिवर्तन हो जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि तकनीक लोगों के जीवन में आवश्य ही परिवर्तन लाता है। किसी भी समाज की आधी आबादी अर्थात महिलाएँ इससे अधुती तो नहीं रहेगी।

सूचना एवं महिलाएँ तकनीक के माध्यम से आप घर बैठे सभी कार्य कर सकते हैं। डिजिटल इण्डिया जो भारत की एक ऐसी योजना है किसी समाज की गाड़ी स्त्री एवं पुरूष नामक दो पहियों से चलती है। एक भी पहिया खराब हो जाये तो यह गाड़ी नहीं चल सकती जिस समाज की महिलाएँ कमजोर पड़ जाती हैं वह समाज विकास क्रम में पीछे रह जाता है। इसके विपरीत जिस समाज की महिलाएँ सशक्त होंगी वह समाज विकास क्रम में अग्रणी होगा। महिलाओं को सशक्त करना इसी कारण आवश्यक है। इनको सशक्त करने के कई माध्यम है। इनमें से सूचना एवं महिलाएँ तकनीक सबसे ज्यादा त्वरित है। इसके उपयोग से सशक्तिकरण को गति प्रदान की जा सकती है। इस तकनीक का इस्तेमाल कर महिलाएँ घर बैठे ही बाहरी दुनिया की सारी जानकारी एवं ज्ञान प्राप्त कर सकती है।

समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड

वर्तमान भारतीय समाज ज्ञान समाज की ओर उन्मुख है जिसमें सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।

अध्ययन विषय–

मैंने हमेशा से स्त्री–पुरूष के मध्य रहे भेदभाव को भी महसूस किया है और भेदभाव के परिणाम स्वरूप होने वाले असमानता से भी परिचित हूँ। भारतीय समाज में महिलाओं के साक्षरता को महत्व नहीं दिया जाता जिसके परिणाम स्वरूप वह शिक्षित नहीं हो पाती और अपने अधिकारों से वंचित रह जाती है। अपने अधिकारों की जानकारी न होने के कारण अपने प्रति हो रहे अन्याय और शोषण को सही और तर्क संगत महसूस करती है और देखा जाये तो कहीं न कहीं इस शोषणकारी व्यवस्था की जाने अनजाने संरक्षक भी बन जाती है। ये असमानता एवं भेदभाव केवल भारत में ही नहीं बल्कि, पूरी दुनिया में देखने को मिलता है। परन्तु अन्तर केवल इतना है कि बाकी दुनिया की महिलाएँ इस भेदभाव के विरूद्ध तरह–तरह के आन्दोलन चला कर दुनिया का ध्यान अपने ओर आकर्षित करती रही है तथा इस असमानता एवं भेदभाव को कम करने में सफलता भी प्राप्त की है। भारतीय समाज में शिक्षा की कमी के कारण जागरूक महिलाओं की संख्या भी कम है। जिसका मुख्य कारण भारतीय सामाजिक संरचना है. जिसमें परिवर्तन तभी सम्भव है जब हम इन महिलाओं को शिक्षित, सशक्त एवं जागरूक बना पायेगें।

इन्हें शिक्षित, सशक्त एवं जागरूक बनाने के लिए कई प्रकार के साधन है इन्हीं साधनों में से एक साधन है सूचना एवं महिलाएँ तकनीक तो वर्तमान में किसी से भी अछूता नहीं है।

निर्णय क्षमता का विकास–

महिला सशक्तिकरण से हमारा अभिप्राय है महिला को शक्ति सम्पन्न बनाना अर्थात् महिलाओं को पुरूषों के समान वैधानिक, राजनैतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में उनके परिवार, समुदाय, समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वायत्तता प्रदान करता है। महिला सशक्तिकरण महिलाओं को घरेलू शक्ति सम्बन्धों का बेहतर ढंग से समायोजन करके बाह्य परिवेश में स्वायत्तता प्राप्त कर सकने की क्षमता प्रदान करता है। सशक्त महिला किसी कार्य को करने या रोकने की क्षमता रखती है।

सूचना का अर्थ– सूचना किसी भी प्रकार की कोई सामग्री हो सकती है, जिसमें अभिलेख, दस्तावेज, ई–मेल, विचार, परामर्श आदेश, संविदा प्रतिवेदन, प्रेस रिलीज नमूने किसी भी रूप में रखी गई इलेक्ट्रानिक सांख्यिकी सामग्री एवं निजी संकाय से सम्बन्धित ऐसी सूचना जो लोक प्राधिकरण द्वारा किसी भी कानून में प्राप्त की जा सकती है। सम्मिलित है (भारत के आर.टी.आई. एक्ट, 2005 के अनुच्छेद 2F)

संचार का अर्थ– हिन्दी के महिलाएँ शब्द का समानार्थक आंग्ल भाषा में कम्युनिकेशन माना जाता है। कम्युनिकेशन शब्द लैटिन भाषा के कम्युनिस से बना है, जिसका अर्थ (To make common, to share, to import, to transmit) सामान्यीकरण, सहभागी, प्रवेश एवं सम्प्रेषण है। "महिलाएँ ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है, जो परस्पर सम्बद्ध एवं उद्देश्यपूर्ण है। महिलाएँ के द्वारा व्यक्ति में समझदारी का विकास होता है।" महिलाएँ वह प्रक्रिया है, जिसमें श्रोत एवं श्रोता के मध्य सूचना सम्प्रेषण होता है।

भारत में सूचना एवं संचार तकनीक–

"भारत में इंटरनेट की शुरूआत लगभग 20 वर्ष पहले हुई। सर्वप्रथम सैनिक अनुसंधान नेटवर्क (ईआरनेट) ने शैक्षिक और अनुसंधान क्षेत्रों के लिए इसका उपयोग शुरू किया। ईआरनेट भारत सरकार के इलेक्ट्रानिक विभाग तथा यूनाइटेड नेशन्स डेवलपमेंट प्रोग्राम का एक संयुक्त उपक्रम था। एनसीएसटी, मुंबई द्वारा अंर्तराष्ट्रीय सम्पर्क प्राप्त होने लगा। 15 अगस्त 1995 को विदेश महिलाएँ निगम लिमिटेड ने गेटवे इण्टरनेट एक्सेल सर्विस (जी0 आई0 ए0 एस0) की स्थापना वाणिज्यिक तौर पर हुआ। इसने मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, कलकत्ता, बेंगलूर और पूणे में यह इण्टरनेट नोड स्थापित किए। दूरमहिलाएँ विभाग से मिलकर इसने देश के अन्य बड़े शहरों को भी इण्टरनेट से जोड़ा। तत्पश्चात् दूर महिलाएँ विभाग ने आईनेट नामक नेटवर्क के द्वारा देश के इण्टरनेट से जोड़ने का काम शुरू किया। इस समय भारत में तीन सरकारी एजेंसिया इण्टरनेट सर्विस प्रोवाइडर (ISP) थी। दूर महिलाएँ निगम लिमिटेड। 1994 की उदारीकरण नीति ने इस क्षेत्र में कम्पनियों के प्रवेश के लिए भी रास्ता खुल गया। सरकार द्वारा बनाई गई इण्टरनेट नीति के परिणामस्वरूप कई देशी विदेशी कम्पनियाँ आज भारत के इंटरनेट प्रेमियों को इण्टरनेट सुविधाए उपलब्ध करा रही है।

डिजिटल इण्डिया को 20 अगस्त 2014 को मंजूरी प्रदार की गई। इस योजना का उद्देश्य लोगों तक आसानी से सरकारी सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करना और आधुनिकतम सूचना और महिलाएँ तकनीक से लोगो को फायदा पहुंचाना है तथा डिजिटल माध्यम से साक्षरता के जरिए नागरिकों को सशक्त बनाया जा सके। डिजिटल इण्डिया के द्वारा सभी सरकारी कागजात/प्रमाण पत्र क्लाउड पर उपलब्ध कराए जायेगें।

यदि सुचनाओं को डिजिटल कर दिया जाए और सम्प्रेषण को आसान बना दिया जाए तो सरकार की विभित्र कल्याणकारी योजनाओं के विषय में लोगों को जानकारी होगी।

आने वाले कुछ सालों में सूचना एवं संचार तकनीक लोगों की जीवन रेखा बन जायेगी जो लोगों को आसानी से घर बैठे ही बहुत सारी जानकारियाँ प्रदान करेगा। किसी को भी अपने अधिकारों एवं अपने लिए चलाये जा रहे कल्याणकारी कार्यक्रमों के बारे में आसानी से जानकारी हो जायेगी। इस योजना के द्वारा सारे विभागों के दस्तावेज क्लाउड पर होने से यह सभी के पहुँच में होगी। इस व्यवस्था के बाद

महिलाएँ अपने अधिकारों से आसानी से परिचित होगी तथा अपने लिए चलाये जा रहे कल्याणकारी कार्यकमों का लाभ उठा सकेगीं। सूचना एवं महिलाएँ तकनीक महिलाओं को सशक्त बनाने में बहुत बड़ी एवं अहम् भूमिका अदा करेगा, और वर्तमान में भी कर रहा है। इस तकनीकी का लाभ उठा कर महिलाएँ जागरूक एवं सामाजिक राजनैतिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त बन रही है। सूचना एवं महिलाएँ तकनीक के मार्ग में शिक्षा एवं भाषा एक अवरोध के रूप में सामने आया है। बहुत सारे विकासशील देशों में एक प्रतिशत से भी कम महिलाएँ एवं पुरूष इण्टरनेट का इस्तेमाल करते हैं। एशिया में कुल इण्टरनेट युजर्स में 22 प्रतिशत महिलाएँ ही इण्टरनेट का इस्तेमान करती है।[21]

महिलाएँ क्रान्ति को तेज धार बनाने में प्रौद्योगिकी के योगदान को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता और वहीं विकासात्मक गति ने महिलाएँ में वैकल्पिक मीडिया के नए आयामों जैसे इण्टरनेट, सैल्यूलर फोन, टेलीफोन, फैक्स, स्थानीय वेतार लूप, ई–चौपाल, टेलीफोन डाकिया, ग्रामीण टेलीफोन सेवा दूर महिलाएँ आदि को उभारने का कार्य किया है।[22]

सूचना एवं महिलाएँ प्रौद्योगिक के इस दौर में यह प्रौद्योगिकी लोगों पर सबसे ज्यादा प्रभाव डाल रही है। यह प्रौद्योगिकी कम या ज्यादा सबके इस्तेमाल में आती है। यही कारण है कि यह विषय महिलाओं के इस प्रौद्योगिकी से परिचय का पता लगाने का तथा इससे कितनी प्रभावित है यह जानना है।

अध्ययन की समस्या–

प्रस्तुत अध्याय की मुख्य समस्या नगरीय महिला सशक्तिकरण में सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी की भूमिका को जानना। एक तरफ जहाँ सूचना एवं भूमिका को जानना। एक तरफ जहाँ सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी में आए दिन नई खोज हो रही है और इन्ही खोजों के माध्यम से हम चाँद और मंगल तक जा पहुँचे हैं। सारी दुनिया इस तकनीक के माध्यम से एक हो गई है इससे सारी दुनिया इतनी प्रभावित है कि यदि इस तकनीक को दुनिया से हटा दिया जाये तो शायद एक दिन भी बड़ी मुश्किल से गुजरे। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी गहना प्रभाव है इस तकनीक से जहाँ दुनिया प्रभावित है वहीं भारत भी इससे उतना ही प्रभावित है और भारतीय महिलाएँ भी इससे कम प्रभावित नहीं हैं। भारतीय महिलाएँ इससे कितना प्रभावित नहीं है। भारतीय महिलाएँ इससे कितना प्रभावित हैं और किस तरह से प्रभावित है यही जानना मेरे अध्ययन की समस्या है। इस विषय पर कई अध्ययन उपलब्ध हैं। परन्तु आजमगढ़ में कोई अध्ययन नहीं हुआ है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की समस्या "नगरीय महिला सराक्तिकरण में सूचना एंव संचार तकनीकी की भूमिका उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ के विशेष सन्दर्भ में।"

अध्ययन का उद्देश्य–

किसी भी शोध कार्य की उपयोगिता हमेशा उसके उद्देश्यों से मापी जाती हैं उद्देश्यों के बिना कोई भी अध्ययन दिशाहीन हैं। उद्देश्यों से अध्ययन की दिशा का ज्ञान होता है तथा एक समूह शोध कार्य को निष्कर्षात्मक एवं अर्थात्मक बनाता है।

अतः कोई भी अध्ययन तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक वह उद्देश्यपूर्ण न हो। इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्यों के माध्यम से दिशा देने का प्रयास किया गया है–

1. नगरीय महिलाओं के सामाजिक आर्थिक पृष्ठ भूमि को जानना।
2. सूचना एवं महिलाएँ के माध्यमों के सम्बन्ध में नगरीय महिलाओं की जानकारी का पता करना।
3. नगरीय महिला सशक्तिकरण में सूचना एवं महिलाएँ तकनीकों की भूमिका को जानना।
4. नगरीय महिला के पारिवारिक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, प्रस्थिति के निर्धारण में सूचना एवं महिलाएँ की भूमिका का पता करना।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पना–

1. नगरीय महिलाओं के लिए सूचना एवं संचार तकनीके केवल आवश्यकता पूर्ति का माध्यम है, सशक्तिकरण का नहीं।
2. नगरीय महिलाओं मे सूचना एवं संचार तकनीकों का नकारात्मक प्रभाव ज्यादा और सकारात्मक प्रभाव कम ।
3. महिलाओं मे सूचना एवं संचार तकनीकों के माध्यम से जागरूकता बहुत ज्यादा आ गयी है।
4. महिलाओं मे सूचना एंव संचार तकनीकों के माध्यम से सीखे हुए व्यवहार प्रायः भ्रामक होते है।

शोध प्ररचना–

शोध कार्य को आरम्भ करने से पहले ही अनुसंधानकर्ता द्वारा जो रूपरेखा बनाई जाती है वहीं अनुसंधान प्ररचना कहलाती है। अनुसंधान प्ररचना अनुसंधान को व्यवस्थित, क्रमबद्ध एवं प्रभावपूर्ण तरिके से न्यूनतम प्रयासों, समय एवं लागत के साथ संचालित करने हेतु प्ररचना का निर्माण आवश्यक है। विभिन्न विद्वानों ने शोध प्ररचना को निम्न प्रकार परिभाषित किया है।

विवरणात्मक अनुसंधान का उद्देश्य उन उपकल्पनाओं का परीक्षण है जो दे परिवत्यों के सम्बन्ध को बताते हैं या किसी घटना की बारम्बारता की सूचना देते हैं। अतः शोध की प्रकृति के अनुसार ही अध्ययन में विवरणात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया जायेगा। क्योंकि ऐसे शोध प्ररचना का सम्बन्ध समस्या के विषय में यथार्थ अथवा वास्तविक तथ्यों को एकत्रित करके उनके आधार पर उनका विवरण प्रस्तुत करना है।

अध्ययन क्षेत्र–

प्रस्तुत अध्ययन आजमगढ़ जिले का है जो पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित हैं इसका कुल क्षेत्रफल 4,054 वर्ग किमी० है। इसके पूर्व में मऊ, उत्तर में गोरखपुर, दक्षिण पूर्व में गाजीपुर, दक्षिण पश्चिम में जौनपुर, पश्चिम में सुल्तानपुर तथा उत्तर पश्चिम में अम्बेडकर नगर जिला स्थित है। 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार इस जिले की कुल जनसंख्या 4,613,913 है जिसमें शहरी जनसंख्या 393,401 है जिसमें पुरूष जनसंख्या 202,297 तथा महिलाएँ जनसंख्या 191,104 है। आजमगढ़ जिले की साक्षरता दर 70.93 प्रतिशत है। जिसमें साक्षर जनसंख्या 260,774 है। जिसमें 142,957 (89.71 प्रतिशत) पुरूष तथा 11,817 (80.39 प्रतिशत) महिलाएँ शिक्षित है।

अध्ययन का समग्र–

प्रस्तुत अध्ययन आजमगढ़ नगर का है। जिसमें 25 वार्ड हैं। जिसमें 191,104 महिलाएं है। प्रस्तुत अध्ययन 18 से 40 आयु वर्ग की महिलाओं पर आधारित है।

अध्ययन की ईकाइ–

प्रस्तुत अध्ययन के प्रतिदर्श की इकाई आजमगढ़ नगर के वार्डों की संख्या 25 है कि 18 से 40 आयु वर्ग की महिलाएँ हैं जिन पर सूचना एवं महिलाएँ तकनीक के प्रभावों के अध्ययन हेतु चयनित किया गया है।

प्रतिदर्श की विधि–

आजमगढ़ नगर में कुल 25 वार्ड है जिसमें से हमने वार्ड संख्या 23 का चुनाव अध्ययन के लिए किया है। वार्ड की 18 से 40 आयु वर्ग की महिला जनसंख्या ज्यादा होने के कारण सम्पूर्ण अध्ययन सम्भव नहीं है। अतः हम कोटा एवं यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा कुल 300 महिलाओं का चुनाव करेगें।

तथ्य संकलन की विधियाँ–

अध्ययन के लिए प्रतिदर्श तय करने के बाद अगला कदम होता है सही तरीके से सही तथ्य संकलन करना।

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के श्रोतों से तथ्यों का संकलन किया गया है। जिसमें प्राथमिक श्रोत में असहभागी अवलोकन, साक्षात्कार अनुसूची तथा वैयक्तिक अध्ययन आदि प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। जबकि द्वितीयक श्रोत में सम्बन्धित किताबें, शोध पत्र, समाचार पत्र पत्रिकायें आदि प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

सह–सम्बन्ध–

सह–सम्बन्धों को ज्ञात करने के सूत्र–

$$P = 1 - \frac{6\Sigma D^2}{N(N^2-1)}$$

$$r = \frac{\Sigma xy}{\sqrt{\Sigma x^2 X y^2}}$$

तथ्यों का विश्लेषण–

उद्देश्यों के आधार पर तथ्यों का संकलन, कर उनका विश्लेषण सांख्यिकीय प्रविधियों जैसे सारणीयन, प्रतिशत्ता, सह सम्बन्ध आदि अन्य प्रासंगिक तकनीकों का प्रयोग कर किया जायेगा।

इस शोध कार्य के लिए उद्देउश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के आधार पर समग्र में से 300 महिलाओं का जो 18 से 40 आयु वर्ग की है। साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग कर आंकड़ों को एकत्रित किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची को यह ध्यान में रखकर बनाया गया है कि इसमें ऐसे प्रश्न हो जो हमारे अध्ययन की आवश्यकता की पूर्ति करता है।

सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी के प्रभाव को जानने के लिए उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि को ज्ञात किया गया। सारणी 2.6 से ज्ञात होता है कि 61.7 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार में तथा 38.3 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार में रहते हैं। 30.6 प्रतिशत उत्तरदाता सवर्ण जाति के 36 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य पिछड़ा वर्ग के, 31.3 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचित जाति तथा 2 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचित जनजाति के है।

उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि देखने पर ज्ञात होता है कि 30.7 प्रतिशत (92) सवर्ण, 36.0 प्रतिशत (108) अन्य पिछड़ा वर्ग, 31.3 प्रतिशत (94) अनुसूचित जाति, 2 प्रतिशत (6) अनुसूचित जनजाति के लोग है (सारणी संख्या 2.3)। आय के आधार पर 28.3 प्रतिशत (85) उत्तरदाता 5000 तक आय वाले, 28.0 प्रतिशत (84) 5000 से 10000 तक, 19.7 प्रतिशत (59), 10000 से 15000 हजार, 17.0 प्रतिशत (51) 15000 से 20000 तक 7.0 प्रतिशत (21) 20000 से अधिक आय वाले उत्तरदाता है सारणी (2.4)। व्यवसाय के आधार पर 20.0 प्रतिशत (60) गृहणी, 18.7 प्रतिशत (56) बेरोजगार, 31.7 प्रतिशत (95) छात्रा, 4.7 प्रतिशत (14) दिहाड़ी मजदूर, 11.7 प्रतिशत (35) निजी व्यवसाय 13.3 प्रतिशत (40) नौकरी, वाले उत्तरदाता है (सारणी 2.2) आयु वर्ग के आधार पर 18.3 प्रतिशत (55) 18 से 25 आयु वर्ग के 42.7 प्रतिशत (128) 25–30 आयुवर्ग, 32.7 प्रतिशत (98) 30 से 35 आयुवर्ग, 6.3 प्रतिशत (19) 35 से 40 आयु वर्ग वाले है (सारणी 2.1)।

उत्तरदाताओं में सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी के विषय पर जागरूकता का पता विभिन्न प्रश्नों के उत्तर के द्वारा लगाया है उत्तरदाताओं में सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी ने जीवन को आसान बना दिया

है के प्रश्न के उत्तर में सारणी (3.1) में 65.31 प्रतिशत लोगों ने स्वीकार किया। कम्प्यूटर का ज्ञान 59.8 प्रतिशत लोगों को है (सारणी 3.2)। उत्तरदाताओं में डिजिटल इण्डिया के विषय में 46.7 प्रतिशत को पता है (सारणी 3.3)। सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी ने लोगों के जीवन को आसान बना दिया है इसका समर्थन 35.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने किया। 25 से 30 आयु वर्ग वाले इसका समर्थन सर्वाधिक किया। महिला सशक्तिकरण में सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी ने सकारात्मक भूमिका अदा की है इस बात का समर्थन सारणी 3.8 में 56.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने किया। उत्तरदाताओं में से 46.7 प्रतिशत लोगों में डिजिटल इण्डिया के सकारात्मक लोगों का समर्थन किया (सारणी 3.4)।

उत्तरादाताओं में सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी के माध्यम से सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन के विषय में भी विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से जानकारी ली गई। सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी हमारे समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव डाल रहा है के समर्थन में 30.7 प्रतिशत उत्तरदाता है (सारणी 4.1)। 69.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सोश्ल साइट्स का सामाजिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव का समर्थन किया है (सारणी 4.2)। सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी हमारे समाज में परसंस्कृतिग्रहण की प्रवृत्ति में वृद्धि कर रहे है को पूरी तरह समर्थन देने वाले 31.7 प्रतिशत उत्तरदाता है। 25–30 आयु वर्ग वाले इसके ज्यादा समर्थन में है (सारणी 4.3)। सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी के विकास के साथ भारत में पश्चिमीकरण की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है के समर्थन में 64.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं है। 25–30 आयु वर्ग वाले उत्तरदाताओं ने सर्वाधिक समर्थन किया।

उत्तरदाताओं में सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी राजनैतिक जीवन पर क्या प्रभाव डाल रही है को भी विभिन्न प्रश्नों के उत्तर के माध्यम से जानने का प्रयास किया गया है। उत्तर प्रदेश में महिलाओं के लिए चलाए गये हेल्पलाइन नम्बर **"1090"** की जानकारी 58.7 उत्तरदाताओं को है 25 से 30 आयु वर्ग वाले सर्वाधिक है (सारणी 5.1)। देश–विदेश के राजनैतिक गतिविधियों में रूचि केवल 37.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को है। 25–30 आयु वर्ग वाले सर्वाधिक रूचि रखते है (सारणी 6.3)। राजनैतिक गतिविधियों की जानकारी इण्टरनेट के द्वारा 24.1 प्रतिशत उत्तरदाता ही लेते हैं। 25–30 आयु वर्ग वाले सर्वाधिक है (सारणी 5.6)।

उत्तरदाताओं में सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी के माध्यम से आर्थिक परिवर्तन को भी पता लगाने के लिए कुछ प्रश्नों का सहारा लिया गया है। कम्प्यूटर का ज्ञान रखने वाले उत्तरदाताओं में आयु के आधार पर ऑनलाइन शापिंग 62.3 प्रतिशत ही करते है (सारणी 6. 5)। सूचना एवं महिलाएँ तकनीकी का इस्तेमाल अपने कार्य क्षेत्र में 51.2 प्रतिशत उत्तरदाता करते हैं। 25 से 30 आयुवर्ग वाले सर्वाधिक है (सारणी 6.7)। 300 उत्तरदाताओं में 21.3 प्रतिशत (64) उत्तरदाताओं ने कम्प्यूटर कोर्स किया जिसमें से 35.9 प्रतिशत (23) उत्तरदाताओं को ही नौकरी प्राप्त है जिसमें से 25 से 30 आयु वर्ग वाले सर्वाधिक है। (सारणी 6.9, 6.10)।

सूचना एवं महिलाएँ तकनीक महिलाओं में जागरूकता तो ला रही है परन्तु इसकी गति बहुत धीमी है। मैंने अपने अध्ययन में पाया कि 25 से 30 वर्ष आयु वर्ग की महिलाएं ज्यादा जागरूक है। यह तकनीकी सशक्तिकरण करने में सर्वाधिक उपयुक्त है परन्तु इसके उपयोग में कुछ समस्यायें है, जिसे मैंने अपने सुझाव के माध्यम से बताया है।

प्रथम अध्याय– प्रस्तावना में हमने महिलाओं की प्रस्थिति को प्राचीन काल से अब तक महिलाओं की प्रस्थिति का विवरण दिया गया है। सूचना एवं महिलाएँ तकनीक क्या है ? और इसका इतिहास तथा इसके इस्तेमाल से महिला सशक्तिकरण ? सम्बन्धित साहित्य का सिंहावलोकन एवं पद्धतिशास्त्र के अन्तर्गत अध्ययन की समस्या, अध्ययन का उद्देश्य, प्रतिस्थापनायें, शोध प्ररचना, अध्ययन क्षेत्र, अध्ययन का समग्र, प्रतिदर्श की इकाई, प्रतिदर्शन की विधि, तथ्य संकलन की विधियाँ, तथ्यों का विश्लेशण एवं अध्ययन की सीमाएँ।

द्वितीय अध्याय– इसमें उत्तरदाताओं का सामान्य परिचय, अर्थात जाति, परिवार, व्यवसाय, आय एवं शिक्षा आदि का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय – महिलाओं में सूचना एवं महिलाएँ तकनीकों के माध्यमों के विषय में जारूकता का अध्ययन इसमें उत्तरदाता सूचना एवं चार तकनीकों के साधन से कितना परिचित है वह जानने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय– महिलाओं मे सूचना एवं चार तकनीकों के प्रभाव के कारण होने वाले सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन अध्ययन इसके अन्तर्गत सूचना एवं महिलाएँ तकनीक किस प्रकार उनके संस्कृति में परिवर्तन ला रही है तथा उनके समाज में परिवर्तन हो रहा है इसका अध्ययन।

पंचम अध्याय– महिलाओं मे सूचना एवं महिलाएँ तकनीकों के प्रभाव के कारण होने वाले राजनैतिक परिवर्तन का अध्ययन इस अध्याय में महिलाओं में सूचना एवं महिलाएँ तकनीक द्वारा राजनैतिक चेतना के बारे में अध्ययन किया गया है।

षष्ठम अध्याय– महिलाओं मे सूचना एवं महिलाएँ तकनीकों के प्रभाव के कारण होने वाले आर्थिक परिवर्तन का अध्ययन किस प्रकार सूचना एवं महिलाएँ तकनीक महिलाओं में आर्थिक परिवर्तन कर रहा है। इसका अध्ययन इसी अध्याय में किया गया है।

निष्कर्ष–

सूचना तकनीकी (आईटी) ने महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके माध्यम से महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, स्वरोजगार और उद्यमिता के नए अवसर प्राप्त हुए हैं। डिजिटल साक्षरता, ऑनलाइन कार्य, ई–गवर्नेंस और सोशल मीडिया ने महिलाओं की भागीदारी, आत्मनिर्भरता और निर्णय–क्षमता को बढ़ाया है। ग्रामीण और शहरीकृत दोनों क्षेत्रों की महिलाएँ अब वैश्विक स्तर पर जुड़कर अपनी पहचान बना रही हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि सूचना तकनीकी न केवल महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करती है, बल्कि सामाजिक समानता और समावेशी विकास को भी बढ़ावा देती है।

सन्दर्भ–

1. सिंह, कमलेश कुमार, स्त्री विमर्शः विविध पहलू इण्डियन प्रेस प्रा० लि०, इलाहाबाद, 2011 पेज नं0 202
2. गुप्ता, गोपाल जी, वैदिक एवं पुराणकालीन हिन्दु नारियाँ, हिन्दूलाजी बुक्स, दिल्ली 2009, पेज नं0 24
3. कुमार, राधा, स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
4. करात, वृन्दा, जीना है तो लड़ना होगा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006 पेज नं0 9
5. चतुर्वेदी, जगदी"वर, दुरदर्शन और सामाजिक विकास, डब्ल्यू न्यूमैन एण्ड कम्पनी, कोलकता 1991, पेज नं0 79
6. सिंह, योगेन्द्र, भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण रावत पब्लिकेशनस, जयपुर 2008, पेज नं0 296
7. वर्मा, लाल बहादुर, सामाजिक समानता की अवधारणा (पत्रिका) मार्च 2015
8. कुमार, राधा, स्त्री संघर्ष का इतिहास, दिल्ली 1986, पेज नं0 27
9. कश्यप, सुभाष, भारतीय संविधान
10. कुरूक्षेत्र, सितम्बर 2011
11. चतुर्वेदी, जगदी"वर, दुरदर्शन और सामाजिक विकास डब्ल्यू न्यूमैन एण्ड कम्पनी कोलकता 1991, पेज नं0 79
12. रावत, हरिकृष्ण, उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोरा रावत पब्लिकेशन, जयपुर 2007
13. रावत, हरिकृष्ण, सामाजिक अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन, जयपुर 2015